सारांशिका

“आलोचना साहित्य में प्रो॰ कृष्ण नारायण प्रसाद ‘मागध’ का योगदान(असमिया आलोचना साहित्य के विशेष संदर्भ में)”

साहित्य समाज का दर्पण है और साहित्यिक आलोचना से तात्पर्य है साहित्य का सर्वांग निरीक्षण । साहित्य के क्षेत्र में आलोचना से अभिप्राय है किसी साहित्यिक कृति का सांगोपांग निरीक्षण। आलोचक का विचार, चिंतन-मनन, आलोचक दृष्टि का प्रतिफलन उनकी लेखनियों के माध्यम से होता है । साहित्यकार के मर्म की अनुभूति ही आलोचना का उद्देश्य है । प्रो॰ कृष्ण नारायण प्रसाद ‘मागध’ जी भी ऐसे ही व्यक्तित्व के अधिकारी है, जिन्होंने असमिया आलोचना साहित्य को नई दिशा प्रदान की । आलोचना विषयक उनकी मान्यता है कि “समालोचना काव्य को सुबोध बनाकर प्रसादन के साथ-साथ प्रबोधन को भी आत्मसात कर लेती है ।”

असमिया साहित्य के पाठकों और विद्वतजनों में ‘मागध’ जी का नाम अपरिचित नहीं है । वे ऐसे हिंदी भाषी विद्वान है जिन्होंने हिंदी के साथ-साथ असमिया साहित्य विषयक आलोचनात्मक लेख लिखा है । उन्होंने मूलतः हिंदी में ही लिखा है परंतु असमिया साहित्य, विशेषकर आलोचना के क्षेत्र में उनका योगदान द्रष्टव्य है । असमिया रामायणी साहित्य एवं असम में वैष्णव धर्म का प्रवर्तन करनेवाले शंकरदेव एवं माधवदेव के ऊपर उन्होंने जो आलोचनात्मक ग्रंथ लिखे हैं, वे उल्लेखनीय हैं । असमिया साहित्य से संबंधित अनेक लेख उन्होंने हिंदी और असमिया दोनों भाषाओ में लिखा है ।

उनके लेखन मूलतः तीन प्रकार के हैं – हिंदी भाषा साहित्य विषयक, हिंदू देवशास्त्र विषयक और असमिया साहित्य-संस्कृति विषयक आलोचनात्मक ग्रंथ ।

असमिया साहित्य-संस्कृति विषयक आलोचनात्मक ग्रंथ हैं – *असम प्रांतीय राम साहित्य, माधवदेव व्यक्तित्व और कृतित्व, शंकरदेवः साहित्यकार और विचारक, शंकरदेव के नाटक, माधवदेव के नाटक, सूरदास और शंकरदेव के कृष्णभक्ति काव्यों का तुलनात्मक*

अध्ययन(डि॰लिट॰ शोध ग्रंथ) । सन 1971 ई॰ में उनका पहला लेख *'शंकरदेव : मूल्यांकन की समस्या'* प्रकाशित हुआ । लेख हिंदी में होने के कारण असमिया पाठकों का ध्यान प्राय: कम ही गया । स्व॰ श्री बापचन्द्र महंत द्वारा *'शंकरदेवर मूल्यायनर समस्या'* नाम से इसका अनुवाद कर नीलांचल में प्रकाशित होते ही सबका ध्यान उनकी ओर गया ।

हिंदी भाषी साहित्यकारों में 'मागध' जी ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने मध्ययुगीन असमिया साहित्य के ऊपर विशेषज्ञता प्राप्त की है । असमिया समाज – संस्कृति विषयक आलोचनात्मक कृतियों के माध्यम से वैष्णव धर्म के प्रवर्तक शंकरदेव और माधवदेव एवं असमिया समाज व्यवस्था को राष्ट्रीय स्तर पर लाए और भारतीय साहित्य के वाङ्मय को समृद्ध किया । राम कथा पर आधारित कृतियों ने असम प्रांतीय कृतिकारों की परमार्थ चेतना, काव्य चेतना, समाज चेतना की वस्तुन्मुखी, सम्यक और प्रमाणिक विश्लेषण किया । उनकी तटस्थता एवं उदारतापूर्वक विचारों ने असमिया आलोचना साहित्य को नया मान प्रदान किया ।

प्रो॰ कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध' जी द्वारा रचित कृतियों ने असमिया साहित्य आलोचना को नई दिशा प्रदान की है । उनकी रचनाओं ने भारतीय साहित्य के वाङ्मय को समृद्ध किया हैं । हिंदी में 'मागध' जी द्वारा रचित असमिया आलोचनात्मक कृतियों पर अभी तक स्वतंत्र रूप से कोई विचार – विमर्श नहीं हुआ है । इस दृष्टि से प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य है –

1. हिंदी साहित्य जगत में असमिया आलोचना साहित्य को प्रतिष्ठित करने का 'मागध' जी ने जो प्रयास किया है उसे उजागर करना तथा उन कृतियों पर विचार करना इस शोध प्रबंध का उद्देश्य है । हिंदी आलोचना साहित्य में असमिया आलोचना साहित्य को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने राष्ट्रीय भावना और सांस्कृतिक एकता को दृढ़ता प्रदान करने में जो महत्त्वपूर्ण कदम उठाया था, वह भी यहाँ विचारणीय है ।
2. 'मागध' जी द्वारा रचित आलोचनात्मक कृतियों के माध्यम से उनके आलोचक व्यक्तित्व को उजागर करना इस शोध विषय का उद्देश्य है ।

3. उनके असमिया आलोचनात्मक ग्रंथ लिखने के पीछे जो कारण हैं उनपर आलोकपात करना भी प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य है ।

'मागध' जी के साहित्य का सर्वेक्षण करते हुए हमने पाया कि 'मागध' जी ने असमिया आलोचना को नवीनता प्रदान की है । उन पर कई लेख लिखे गए जिन्होंने उनके आलोचक व्यक्तित्व को उभारा एवं असमिया आलोचना साहित्य विषयक रचनाओं पर प्रकाश डाला है । 'मागध' जी द्वारा रचित असमिया आलोचना पर विचार करते हुए तथा उनके आलोचक व्यक्तित्व को उजागर करते हुए उन पर अभिनंदन ग्रंथ लिखा गया है । उनकी साहित्यिक कृतियों पर शोध-प्रबंध एवं लघु शोध प्रबंध लिखे गए हैं । 'मागध' जी ने असमिया साहित्य जगत के शिरोमणि श्रीशंकरदेव एवं श्रीमाधवदेव पर जो आलोचनात्मक कार्य किया है उनसे इन महान साहित्यकारों को हिंदी साहित्य जगत में नवीन स्थान मिला है । असमिया साहित्य में बीसवीं शताब्दी से श्रीमंत शंकरदेव एवं माधवदेव तथा उनके द्वारा प्रचारित वैष्णव मत पर कई ग्रंथ लिखे जा चुके हैं । रसराज लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने सर्वप्रथम '*श्री श्री शंकरदेव*' तथा '*श्री श्री शंकरदेव और श्री श्री माधवदेव*'(1914) नाम से इन महान साहित्यकारों पर समालोचनात्मक ग्रंथ लिखा था । उन्होंने अपने पुस्तक में शंकरदेव को हृदयंगम कर समझने के लिए पाठकों से कहा है "शंकरदेव जिस समय, जिस राजा के अधीन निवास कर, पराक्रमी-स्वार्थी राजा और पराक्रमी ब्राहमणों से विरुद्धचरण कर, अपना धर्ममत निर्भय होकर, अपने जीवन को मुट्ठी में बांध घूम रहे थे, उसे अनुभव करने पर ही उनके निस्वार्थ, निर्भीक, धर्मप्रवण, ईश्वर में विश्वास और उनके निर्गुण-निराकार आराध्य की भक्ति को हृदयंगम कर सकते है, अन्यथा नहीं ।" असमिया साहित्यकार महेश्वर नेओग जी ने भी इन दो महापुरुषों पर कई आलोचनात्मक लेख लिखे हैं, जिन्हें '*शंकरदेव और माधवदेव*' शीर्षक ग्रंथ में संकलित किया गया है । असमिया वैष्णव आलोचना साहित्य के सशक्त समालोचक रहे है – बापचन्द्र महंत । असमिया भाषा में उन्होंने शंकरदेव और माधवदेव तथा वैष्णव साहित्य पर जो रचनाएँ रची हैं, वे काफ़ी महत्त्वपूर्ण हैं । उनके द्वारा रचित रचनाएँ हैं - *'जीवन आरू साहित्य'(1962), 'साहित्य दर्शन'(1963),*

'महापुरुष शंकरदेव'(1964), 'भारतीय धर्म साधना'(1967), 'नामघोषार तत्वदर्शन'(1978), ऐतिहासिक पटभूमित महापुरुष शंकरदेव(1987), युगांतरत शंकरदेव(1991), पटभूमि सहित शंकदेवर दर्शन(1994), बरगीत(1992), शंकरदेवर व्यक्तित्व आरू सत्र वैवस्था(2005) आदि । हिंदी भाषा में रचित महंत जी की रचनाएँ हैं – *'असम में भगवत धर्म और शंकरदेव का दर्शन'(1999), 'सामाजिक पटभूमि सहित असम के बरगीत'(1988)* आदि । इन ग्रंथों में उन्होंने विश्लेषणात्मक ढंग से शंकरी साहित्य पर चर्चा करते हुए समालोचना साहित्य को पुष्ट किया है । 'मागध' जी द्वारा हिंदी में रचित असमिया समालोचनात्मक ग्रंथ भी श्री शंकरदेव और श्री माधवदेव पर आधारित है । प्रस्तुत शोध विषय 'मागध' जी के जीवन तथा उनकी असमिया आलोचनात्मक कृतियों को लेकर प्रस्तुत किया गया है । अत: 'मागध' जी पर जो समीक्षात्मक कार्य हुए हैं, उन पर दृष्टि डालना आवश्यक है । 'मागध' जी पर जो समीक्षात्मक कार्य हुए हैं, वे इस प्रकार के हैं –

(क) *संस्कृति साधक प्रो॰ कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध'*- संपादक डॉ॰ अनंत कुमार नाथ (अभिनंदन ग्रंथ)2003

(ख) *डॉ॰ कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध' व्यक्तित्व और कृतित्व* – डॉ॰ भूपेंद्र सिंह (पी. एच. डी. शोध प्रबंध) राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर 2004

(ग) *डॉ॰ कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध' जीवन और साहित्य वीणा वर्मा* - (एम. फिल. के लिए स्वीकृत लघु शोध प्रबंध) मगध विश्वविद्यालय, बोधगया .

(घ) *प्रो॰ 'मागध' की विचारधाराओं का अध्ययन* – सुधांशु कुमार (एम. ए. परीक्षा में प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध) नव नालंदा बौद्ध महाविहार, नालंदा (डीम्ड विश्वविद्यालय), 2011

भूपेंद्र सिंह ने अपने शोध प्रबंध *'डॉ॰ कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध' व्यक्तित्व और कृतित्व'* में 'मागध' जी के जीवन तथा उनके साहित्यिक कृतियों पर प्रकाश डाला है । 'मागध' जी के संदर्भ में भूपेंद्र सिंह का कथन उल्लेखनीय है "विश्वविद्यालयी प्राध्यापकों की जो आचार्य परंपरा रही है – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य नन्द दुलारे

वाजपेयी, आचार्य नगेन्द्र, आचार्य नलिन विलोचन शर्मा आदि – उस परंपरा की नवीनतम कड़ी में साहित्यिक साधना, वाङ्मयी ज्ञान, वैदूष्य आदि की दृष्टि से आचार्य 'मागध' का स्थान भी सुरक्षित है ।"

'*प्रो॰ मागध की विचारधाराओं का अध्ययन*' इस लघु शोध प्रबंध में सुधांशु कुमार ने 'मागध' जी के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक विचारधाराओं पर तथा उनके प्रेरक उत्स पर आलोकपात किया है ।

प्रो॰ अनंत कुमार नाथ द्वारा संपादित '*संस्कृति साधक प्रो॰कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध'* अभिनंदन ग्रंथ में 'मागध' जी द्वारा रचित असमिया आलोचनात्मक कृति तथा उनके आलोचक व्यक्तित्व पर काफ़ी विचार-विमर्श किया गया है । 'मागध' जी के आलोचक व्यक्तित्व को उजागर करते हुए प्रो॰ भूपेंद्रनाथ रायचौधुरी ने कहा है, "..... डॉ मागधर विश्लेषण प्रकियार एक निजस्व वैशिष्ट्य आछे । इयार निदर्शन *माधवदेव: व्यक्तिव और कृतित्व* ग्रंथर प्रति पृष्ठाते समुज्वल होई उठिछे । तथ्यर प्रमाणिकोता, वैज्ञानिक विश्लेषण प्रक्रिया, तात्विक आलोचनार गोभिरोता, भाषार प्रौढ़ता आरू गवेषणार मौलिकोताइ ग्रंथ खनिक उच्चस्तरीय मर्जदा प्रदान कोरिछे ।(डॉ॰ 'मागध' के विश्लेषण प्रक्रिया की एक निजी विशेषता है । इसका निदर्शन *माधवदेव: व्यक्तिव और कृतित्व* ग्रंथ के हर एक पृष्ठ में प्रस्फुटित हो उठा है । तथ्य की प्रमाणिकता, वैज्ञानिक विश्लेषण प्रक्रिया, तात्विक आलोचना की गंभीरता, भाषा की प्रौढ़ता और गवेषणा की मौलिकता ने इस ग्रंथ को उच्चस्तरीय मर्यादा प्रदान की है ।) " (आलोक; नवंबर,1980)

डॉ॰ सत्येन्द्रनाथ शर्मा ने उनके व्यावहारिक आलोचक रूप का परिचय देते हुए *शंकरदेव : साहित्यकार और विचारक* के आरंभिकी में कहा है कि "आलोच्य ग्रंथ बहु अध्ययन आरू गवेषणार फल बुलि कब पारि । शंकरदेवर स्वरचित सोकोलो ग्रंथ अध्ययन करार उपोरिओ सेई सम्पर्के थका प्रायबोर आलोचनात्मोक ग्रंथ चाली-जारि चाई स्वकीय सिद्धांतत उपनीत होईचे । पुथिखोने शंकरदेवर रचनावली सोकलो दिश सामरि लोबोले चेष्टा कोरिछे (आलोच्य ग्रंथ काफ़ी अध्ययन

और गवेषणा का फल है । शंकरदेव द्वारा रचित सभी ग्रंथों का अध्ययन कर तथा उन पर जो आलोचनत्मक ग्रंथ लिखे गए हैं उनका भी अध्ययन कर स्वकीय सिद्धान्त पर उपविष्ट हुए है । ग्रंथ ने शंकरदेव की रचनावली की हर एक दिशा को समेटने की कोशिश की है।) ”

डॉ. धर्मदेव तिवारी ने ‘मागध’ जी के आलोचनात्मक दृष्टि का परिचय देते हुए कहा है कि *असम प्रांतीय राम साहित्य*, रामाख्यानक परंपरा को समझने – बूझने में काफ़ी हद तक सहायक होगी साथ ही देश की एकता को नई दिशा, नई चेतना भी देगी ।

‘मागध’ जी के हिंदी भाषा में लिखित असमिया आलोचनात्मक साहित्य पर स्वतंत्र रूप से अबतक शोध कार्य नहीं हुआ है । प्रस्तुत शोध प्रबंध इस दिशा में मौलिक तथा महत्त्वपूर्ण अध्ययन है । व्याख्यात्मक और आलोचनात्मक पद्धति से इस शोध विषय को प्रस्तुत किया गया है । उनके आलोचक व्यक्तित्व को उजागर करने के लिए व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है । हिंदी में रचित असमिया आलोचना साहित्य को उन्होंने जो सम्बृद्धता प्रदान की उसे व्याख्या एवं आलोचना के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है । प्रयोजनसापेक्ष इस शोध विषय को प्रस्तुत करने के लिए विश्लेषणात्मक एवं विवेचनात्मक पद्धति का भी प्रयोग किया गया है ।

प्रस्तुत शोध शीर्षक ‘आलोचना साहित्य को प्रो॰ कृष्ण नारायण प्रसाद ‘मागध’ का योगदान (असमिया आलोचना साहित्य के विशेष संदर्भ में)' के अंतर्गत हिंदी साहित्य के वर्तमान लेखक ‘मागध’ जी ने असमिया साहित्य आलोचना को किस प्रकार हिंदी साहित्य क्षेत्र में प्रतिष्ठित किया उस पर विचार किया गया है । तदुपरान्त ‘मागध’ जी के आलोचक व्यक्तित्व पर विचार किया गया तथा उनके द्वारा हिंदी में रचित असमिया साहित्यिक आलोचना पर विचार किया गया है । इस क्रम में उनके व्यक्तित्व-कृतित्व तथा असमिया आलोचनात्मक ग्रंथ लिखने के कारक तत्वों पर भी विचार किया गया हैं, साथ ही ‘मागध’ कालीन असमिया आलोचना पर संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है । असमिया वैष्णव साहित्य के उद्भावक श्रीमंत शंकरदेव और माधवदेव तथा असम प्रांतीय राम साहित्य पर हिंदी में स्वतंत्र रूप से कोई आलोचना नहीं हुई है ।

'मागध' जी ने ही पहली बार स्वतंत्र तथा प्रमाणिक रूप से इन पर आलोचनात्मक ग्रंथ लिखकर हिंदी साहित्य क्षेत्र में इन्हें प्रतिष्ठित किया । उनकी यह देन हिंदी एवं असमिया साहित्य के लिए अतुलनीय है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को लिखने के लिए मुख्य रूप से आधार ग्रंथ स्वरूप 'मागध' जी द्वारा रचित असमिया आलोचनात्मक ग्रंथों को लिया गया हैं । वे हैं- *सूरदास और शंकदेव के कृष्णभक्ति काव्य का तुलनात्मक अध्ययन, असम प्रांतीय राम साहित्य, माधवदेव: व्यक्तित्व और कृतित्व, शंकरदेव: साहित्यकार और विचारक, शंकरदेव के नाटक, माधवदेव के नाटक, शंकरदेवर काव्यादर्श(निबंध संग्रह) ।*

इस शोध विषय को विस्तार देने के लिए इसे पाँच अध्यायों में बांटा गया है । प्रथम अध्याय में आलोचना साहित्य पर चर्चा की गयी है । इस अध्याय में आलोचना के अर्थ और स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है । साथ ही आलोचना के प्रकारों एवं आलोचना की पाश्चात्य, प्राच्य और असमिया परिभाषा और परंपरा पर दृष्टिपात किया गया है । यहाँ आलोचना को विभिन्न विद्वानों ने किस प्रकार परिभाषित किया हैं उस पर विचार किया गया है । आलोचना की परंपरा पर प्रकाश डालते हुए यह निष्कर्ष निकला है कि आलोचना का आरंभ पाश्चात्य साहित्य से ही हुआ है, तत्पश्चात यह हिंदी साहित्य में प्रविष्ट हुआ है । प्लेटो द्वारा रचित 'रिपब्लिक' पहला आलोचनात्मक ग्रंथ है । धीरे-धीरे इसका प्रभाव भारतीय साहित्य पर पड़ा और हिंदी के साथ ही आंचलिक अन्य भाषाएँ भी इससे अछूती न रह पायी । आधुनिक काल में ही हिंदी समालोचना का वास्तविक प्रारम्भ हुआ । असमिया साहित्य भी इससे अप्रभावित न रह पायी । अरुणोदोय युग में प्रथम असमिया समालोचनात्मक पत्रिका प्रकाशित हुई और उतोरोत्तोर इसका विकास होता गया ।

द्वितीय अध्याय में 'मागध' जी के सम्पूर्ण जीवनवृत्त एवं कर्म जीवन और साहित्यिक कृतियों पर प्रकाश डाला गया है । उनके बाल्य जीवन और स्कूली शिक्षा, डीग्री कॉलेज में हिंदी व्याख्याता, गौहाटी विश्वविद्यालय में कर्म जीवन, मणिपुर विश्वविद्यालय में कर्म जीवन,

ईटानगर में कर्म जीवन का समापन तत्पश्चात गाँव में वापस लौट जाना, डॉ॰ 'मागध' जी के व्यक्तित्व और डॉ॰ 'मागध' के कृतित्व पर विस्तृत रूप में विचार किया गया है । इस अध्याय में 'मागध' जी के व्यक्तित्व निर्माण में पारिवारिक, सामाजिक पृष्टभूमि और जीवन की छोटी-बड़ी घटनाओं के योगदान पर विचार किया है । 'मागध' जी के व्यक्तित्व के निर्माण में उनके परिवार तथा कर्मजीवन का अनुभव और कर्मजीवन के दौरान मिलने वाले व्यक्तियों का प्रभाव रहा । 'मागध' जी के जुझारू व्यक्तित्व का बीज वपन बाल्यकाल में ही हो चुका था । वे विरोधों का सामना करते हुए जीवन में आगे बढ़ते रहे । 'मागध' जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए एवं उनके असम के प्रति प्रेम और असमिया साहित्य को राष्ट्रीय प्रेक्षापट में उभारने के जुनून को देखते हुए प्रो॰ भव प्रसाद चलिहा ने सात अप्रैल, 2003 के दैनिक असम में प्रकाशित संस्मरण 'असम बंधु कृष्णनारायण प्रसाद मागध' में उन्हें 'असम का प्रकृत बंधु' कहा है । वे सादा जीवन और उच्च विचार को महत्त्व देते थे । रामेश्वर प्रसाद सिन्हा के अनुसार "उनका रहन-सहन जैसा सादा था, वैसा भोजन भी" । इस अध्याय में उनके द्वारा रचित ग्रंथों पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डाला गया है ।

तृतीय अध्याय में प्रो॰ 'मागध'कालीन असमिया आलोचना पर विचार किया गया है । इस अध्याय में असमिया समालोचना के विकाश पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालते हुए 'मागध' कालीन असमिया आलोचकों तथा असमिया आलोचना की धाराओं पर विचार किया गया है । उस समय आलोचना की दो धाराएँ चल रही थी । पहली धारा थी विश्लेषणात्मक और गवेषणात्मक, जिसका नेतृत्व डॉ॰ वाणिकांत काकती की परंपरा में डॉ॰ महेश्वर नेओग कर रहे थे । दूसरी धारा मूलतः वर्णनात्मक थी । यद्यपि इसमें भी विश्लेषण का अभाव नहीं था, इसका नेतृत्व डॉ॰ विरिंचि कुमार बरुवा की परंपरा में डॉ॰ सत्येन्द्रनाथ शर्मा कर रहे थे । एक तीसरी धारा थी प्रगतिवादियों की । 'मागध' जी इस धारा से प्रभावित नहीं थे । उनकी आलोचना मूलत: वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा गवेषणात्मक थी । महेश्वर नेओग, सत्येंद्र नाथ शर्मा और 'मागध' एक साथ गौहाटी विश्वविद्यालय में कार्यरत थे । असमिया में इन लेखकों का काफ़ी

प्रभाव था । 'मागध' जी को नेओग जी ने ही असमिया आलोचनात्मक ग्रंथ लिखने के लिए प्रेरित किया था ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का चतुर्थ अध्याय है प्रो॰ 'मागध' कृत असमिया आलोचना के कारक तत्व और 'मागध' जी का आलोचक व्यक्तित्व । इस अध्याय में 'मागध' जी ने जो आलोचनात्मक रचनाएँ रची हैं, उसके कारणों पर विचार किया गया है । असम में कर्म जीवन आरंभ करने के पश्चात असमिया न जानने के कारण 'मागध' जी का मन कचोटता था । इस कारण उन्होंने असमिया सीखी । भक्ति साहित्य के प्रति 'मागध' जी का आग्रह पहले से ही था । फिर असमिया सीखने के पश्चात उन्होंने असमिया, मूलत: भक्ति साहित्य पर लिखना आरंभ किया और इस प्रकार असमिया भक्ति साहित्य की आलोचना कर उसे राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया । प्रस्तुत शोध विषय का प्रमुख उद्देश्य है 'मागध' जी के आलोचक व्यक्तित्व को उजागर करना, जो इस अध्याय में दर्शाया गया है । यहाँ उनके प्रखर आलोचक व्यक्तित्व पर आलोकपात किया गया है । विवेचन के उपरांत यह पाया गया है कि 'मागध' जी मूलतः गवेषक आलोचक रहे है । उनकी समालोचना मूलतः गवेषणात्मक ही रही है । किसी भी कृति या कृतिकार की समालोचना करने के पूर्व वे उसका गहन अध्ययन, मनन और अनुशीलन करते है तत्पश्चात अपना अभिमत रखते है । उनका यह व्यक्तित्व इसीसे झलकता है कि उन्होंने जो भी असमिया आलोचनात्मक ग्रंथ लिखे है उनका अध्ययन उन्होंने बड़े गंभीर रूप से किया और अपनी कृतियों की रचना संदर्भ ग्रंथो का उल्लेख करते हुए उदाहरण सहित प्रस्तुत किया । उनके इसी आलोचक व्यक्तित्व को उजागर करते हुए प्रो॰ अनंत कुमार नाथ ने कहा है "प्रो॰ 'मागध' के आलोचक रूप की सिद्धि इस तथ्य में निहित है कि वे विवेच्य कृति या कृतिकार की अंतरात्मा में प्रविष्ट हो उसे विश्लेषित-व्याख्यायित करते है । इस क्रम में उनकी दृष्टि किसी प्रांत या भाषा विशेष के साहित्य की अपेक्षा सम्पूर्ण भारत और भारतीय साहित्य पर टिकी रहती है । वे तटस्थता और उदारता पूर्वक विचारों को इस क्रम से उपस्थित करते चलते है कि निष्कर्ष स्वयं झलक उठते है ।"

प्रस्तुत शोध प्रबंध का पंचम और अंतिम अध्याय है प्रो॰ 'मागध' कृत असमिया आलोचना । प्रस्तुत अध्याय में 'मागध' द्वारा रचित असमिया आलोचनात्मक ग्रंथ तथा निबंधों पर समग्रता से विचार किया गया है । । वैष्णव मत के प्रवर्तक एवं प्रचारक शंकरदेव और माधवदेव के विशिष्ट आलोचक के रूप में उन्होंने प्रतिष्ठा प्राप्त की और असमिया साहित्य को राष्ट्रीय मंच पर प्रतिष्ठित किया । यहाँ तुलनात्मक आलोचना के अंतर्गत शंकरदेव और सूरदास का तुलनात्मक अध्ययन किया गया और शंकरदेव को सुरदास से बेहतर ठहराया गया । शंकरदेव और सूरदास के कृष्ण काव्यों में जो व्यापक ऐक्य मिलता है, वह दोनों के मूल आधार ग्रंथों और यत-तत क्षेत्रों के सांस्कृतिक एकन्वयन का परिणाम है । वह भारतवर्ष के भावात्मक ऐक्य का उद्घोषक है । 'मागध' जी के इस तुलनात्मक शोध कृति से निष्कर्ष मिला है कि राष्ट्रीय साहित्य की अपेक्षा विश्वसाहित्य की परिधि विस्तृत है । इससे दो देशों के साहित्य में साम्य-वैषम्य का ही नहीं, मनोवैज्ञानिक समांतरता का भी पता चलता है । मानव की आवेग-अनुभूति और प्रतिक्रियाएँ समान होती है । आवेगों की समता के आधार पर अनेकता से एकता की ओर बढ़ना ही लक्ष्य है । अत: विभिन्न भाषाओं और देशों के साहित्य में प्राप्त समान भावनाओं, विचारों, समस्याओं, परिस्थितियों आदि को पहचानना, रचना के प्रेरक-प्रभावक तत्वों और मानवीय आवेगों की समानता अथवा एकता तक पहुँचना इसकी मूल सिद्धि है ।

व्यावहारिक आलोचना के अंतर्गत *शंकरदेव: साहित्यकार और विचारक* तथा *माधवदेव: व्यक्तित्व और कृतित्व* आते हैं । असम में वैष्णव भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक श्रीमंत शंकरदेव को इतनी समग्रता, विशदता और प्रमाणिकता से उपस्थित करनेवाला यह प्रथम हिंदी ग्रंथ तो है ही साथ ही हिंदीतर भाषाओं में अद्यावधि लिखे गए ग्रंथों की तुलना में श्रेष्ठ भी है । असम, असमिया भाषा और असम की जनता के लिए शंकरदेव का महत्त्व वैसा ही है, जैसा हिंदी के लिए तुलसी, सुर और कबीर की बृहत्रयी का । शंकरदेव की जीवनी और उनकी रचनाओं के कारक तत्वों के विश्लेषण से हमें जानने को मिला कि किन घटनाओं अथवा परिस्थितियों ने शंकरदेव को कब और किस रूप में प्रेरित प्रभावित किया एवं वे उनकी रचनाओं में किस रूप में चित्रित हुई ।

माधवदेव: व्यक्तित्व और कृतित्व में माधवदेव की सम्पूर्ण जीवन गाथा और रचनाओं का वर्णन है । इस ग्रंथ के प्रकाशित होने के पूर्व हिंदी अंग्रेजी ही नहीं, बल्कि असमिया में भी माधवदेव को सर्वांगीण रूप से समझने-बुझने वाले ग्रंथ का सर्वथा अभाव था, इस दृष्टि से आलोच्य ग्रंथ प्रथम होने का गौरव प्राप्त करता है । दोनों महापुरुषों के व्यक्तित्व और कृतित्व को हिंदी में प्रमाणिक ढंग से उपस्थित कर डॉ॰ 'मागध' ने अपने लेखकीय उद्देश्य 'हिंदी अब भारती बन चुकी है' को पूरा किया । इस अध्याय में ऐतिहासिक आलोचना के रूप में असम प्रांतीय राम साहित्य पर विचार किया गया है । असम प्रांतीय राम काव्य के आप विशिष्ट अध्येता रहे है । उन्होंने असम ही नहीं उत्तर-पूर्वी भारत में मर्यादा-पुरुषोत्तम राम को लेकर जो रचनाएँ रची गयी उनका संकलन किया और उनका गंभीर रूप से अध्ययन किया । फिर उन पर विचार-विमर्श करते हुए अपना अभिमत व्यक्त किया है ।

उन्होंने मूलतः हिंदी में ही लिखा है परंतु उनकी लेखनी का क्षेत्र रहा है असमिया साहित्य । असमिया साहित्य के मध्यमणि श्रीमंत शंकरदेव और माधवदेव की रचनाओं तथा उनके जीवन, व्यक्तित्व का सर्वात्मक रूप में आलोचना और विचार कर प्रमाणिक रूप में हिंदी साहित्य में प्रतिष्ठित किया । हिंदी में इन महान वैष्णव भक्त तथा रचनाकारों की कृतियों की गवेषणात्मक आलोचना कर उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने का श्रेय 'मागध' जी को जाता है । सम्पूर्ण असम प्रांत में रामायणी साहित्य पर जो भी रचनाएँ रची गयी, उनपर अपना विचार रख हिंदी साहित्य में लाने का श्रेय भी 'मागध' जी को ही जाता है । उन्होंने अपनी लेखनियों के माध्यम से 'हिंदी अब भारती बन चुकी है' इस कथन की सत्यता को प्रतिपादित किया है । 'मागध' जी का आलोचक व्यक्तित्व भी काफ़ी प्रभावकारी रहा है । उनकी आलोचना गवेषणात्मक है । 'मागध' जी ने वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति से असमिया कृति और कृतिकारों की आलोचना कर प्रमाणिक रूप में उन्हें राष्ट्रीय यानी हिंदी साहित्य क्षेत्र में प्रस्तुत किया है ।

मरमी राय बरुआ